मोमासर के मरूदेवा अतिथि गृह में अपने नित्य प्रवचन में आचार्य महाप्रज्ञ ने संबोधि गृंथ पर चर्चा करते हुए कहा कि हम मानते है की अमीरी गरीबी सब अपने कर्म और भाग्य से मिलती है यह धारणा कैसे पैदा हुई । इसे कर्मवाद से नहीं जोडना चाहिए कारण यह व्यवस्था है । एक क्षेत्र ऐसा भी जहां सब कुछ सुलभता से उपलब्ध हो जाता है यह द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव के कारण होता है । व्यवस्था उचित हो और सबको इसकी पूर्ति हो तो कर्मवाद में बाधा नहीं आयेगी । अगर व्यवस्था अच्छी नहीं होगी तो इंसान कष्ट का अनुभव करता है और अगर व्यवस्था अच्छी होगी तो परेशानी का अनुभव नहीं होगा । अगर हम राजस्थान का ही उदाहरण लें तो यहां पानी की समस्या है और अगर आता भी तो दुषित होता है यह सब व्यवस्था पर निर्भर करता है । आज शासक वर्ग और अधिकारी वर्ग को व्यवस्था के प्रति जागरूक रहना चाहिए । जब भी शासक अच्छा होगा प्रजा भी सुखी रहेगी । इंसान में अंहकार और बडप्पन का लाभ जो सबको अपने अधिन करना चाहता लेकिन वह यह नहीं जानता की किसी के बस में कुछ नहीं चलता । यह प्रकृति का रोल है सब कुछ कर्म से नहीं होता व्यवस्था से भी होता है । हमें प्रत्येक जिम्मेदारी को कर्म पर ना छोडकर विवेक और पुरषार्थ से कार्य करना चाहिए । अगर समाज की मानसिक दशा अच्छी होगी तो भाग्य अपने आप जाग जाता है और कार्य भी अच्छे ही होते हैं ।

युवाचार्य महाश्रमण ने अपने प्रवचन में कहा कि इंसान में प्रमाद आने पर ज्ञान प्राप्ति में बाधा उत्पन होती है यह हम सब का शत्रु है और संयम ही जीवन है। हमें अगर दुखों से मुक्त होना है तो पहले उसके कारणों को खोजना होगा । उन्होने गीता के 18वें अध्याय का उल्लेख करते हुए कहा की तामस सुख की व्याख्या करते हुए बताया कि जिसके प्रारम्भ में भी मोह और परिणाम में भी मोह हो उसे तामस सुख कहतें हैं । निद्रा, प्रमाद, आलस्य यह तीनों सुख तामस कोटि के सुख माने जाते हैं । प्रंमाद का सुख मोह से जुडा होता है । वहीं क्रोध से दिमाग अंसतुलित हो जाता है और उत्तेजित मस्तिक से ज्ञान प्राप्त करना संभव नहीं होता । और हमें तामस सुख से बचने का प्रयास करना चाहिए । इंसान को तामस कोटि के सुख से बचने का प्रयास करना चाहिए । कार्यक्रम में मुनिसुखलाल ने भी अपने विचार प्रकट किए ।